हनुमान कृत श्री सीता राम स्तोत्रम

यह स्तोत्र राम और सीता की संयुक्त प्रार्थना है । हर छंद की पहली और तीसरी पंक्ति राम के गुणों का वर्णन करती है और हर बदतर की दूसरी और चौथी पंक्ति सीता के गुणों का वर्णन करती है।

अयोध्या पुरा नेथाराम,मिथिला पुरा नायकम।

राघवनम अलंकारम,वैदेहानां मलंक्रीयम।। 1।।

अयोध्या के शहर के नेता ,मिथिला के शहर के नेता, रघु

के वंश के लिए आभूषण , और विदेह के परिवार के लिए आभूषण।

रघुनम कुल दीपम चा,निमीनाम कुल दीपिकाम्।

सूर्य वंश समुध भूतम,सोमा वंश समुध भवं।। 2।।

रघुवंश की ज्योति ,निमि के कुल की ज्योति,सूर्यदेव के कुल में जन्मा, चन्द्रदेव के कुल में जन्मा।

पुत्रम दसरदास्यापी,पुत्रीम जनक भूपथे।

वशिष्ठनु माथाचरम,सतानंद मथानुगम।। 3।।

दशरथ के पुत्र ,जनक की पुत्री,वशिष्ठ की इच्छा का पालन सदानंद की इच्छा का पालन किया।

कौशल्या गर्भ संभूतम,वेदी गर्भोदिथम स्वयं।

पुंडरीका विसलक्षम,स्फुरद इन्धि संकेतम।। 4।।

रानी कौशल्या से पैदा हुआ,स्वयं यज्ञ तल से गुलाब,जिनके पास कमल जैसी आंखें हैं,जिनके पास पूरी तरह से खुले इंदीवारा फूल जैसी आंखें हैं।

चंद्र कंठाननभोजम,चन्द्र भिम्बो उप मनानम।

माथा मथंगा गमनम,माथा हंसा वधू गतिम।। 5।।

चंद्र कंठ द्वारा खोले गए कमल के फूल की तरह था,जिसकी तुलना चंद्रमा के चेहरे से की जा सकती है,जो एक सक्रिय हाथी की तरह चलता है,जो एक सक्रिय हंस की तरह चलता है।

चंदन अर्धभुज मध्यम ,कुंकुमारधर्क कूचा स्थलिम।

चपलंकृत हस्तभजम,पद्मलंकृत पणिकम्।। 6।।

जो छाती पर चन्दन लगाती है,जो अपने वक्षों को केसर से सजाती है, जिसके हाथों में डोरी है,जिसके हाथों में कमल का फूल सुशोभित है।

सारनगाथा गोप्थारम,प्रणिपदा प्रसादिकम।

कला मेघा निभाम,करथा स्वर समा प्रभाम।। 7।।

जो समर्पण करने वालों की रक्षा करते हैं,जो उनकी भक्ति से प्रसन्न होते हैं,जो काले बादल के रंग के होते हैं,जो सोने की तरह चमकते हैं।

दिव्या सिंहासनासीनम,दिव्या श्रग वस्त्र भूषणम।

अनुक्षणम कदक्षभ्याम,अन्योन्य क्षण कामक्षीनौ।। 8।।

जो दिव्य सिंहासन पर विराजमान हैं,जो दिव्य माला और वस्त्र धारण करते हैं,जो हर क्षण निहारते हैं,जो एक दूसरे से निमंत्रण चाहते हैं।

अन्योन्या सद्रसा करौ,त्रैलोक्य ग्रह दम्पति।

इमोउ युवाम प्रणम्यहम,बजम्यध्या क्रुथर्थधाम।। 9।।

एक दूसरे के समान रूप,वे तीनों लोकों के महान युगल हैं,और मैं उन दोनों को प्रणाम करता हूँ, और कृतज्ञता के साथ उनकी स्तुति गाता हूँ।

इधियं रामचंद्रस्य,जनक्यश्च विशेषे।

क्रुथा हनुमत पुण्य,स्तुति साध्यो विमुक्तिधा।। 10।।

रामचंद्र के ये वर्णन,और जानकी के भी,पवित्र हनुमान द्वारा दिए गए थे ,जो इसका उपयोग करते हुए प्रार्थना करते हैं,

अनाया स्थौति यद स्थथ्य,रामं सीतां च भक्तिथा।

तस्य तू थनुथम प्रीतो,संपदा सकला आपि।। 11।।

जो भक्तिपूर्वक राम और सीता की पूजा करता है, उसके सारे संकट दूर हो जाते हैं और वह उनका प्रिय हो जाता है, और वह सभी प्रकार के धन अर्जित कर लेता है।

एवं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।

कृतं हनुमंता पुण्यं स्तोत्रं सद्य विमुक्तिदम्।

यः पठेत् प्रातः उत्थाय सर्वान् कामान्वाप्नुयात्।।

इति हनुमान कृत श्री सीताराम स्तोत्रं संपुर्णम्।।
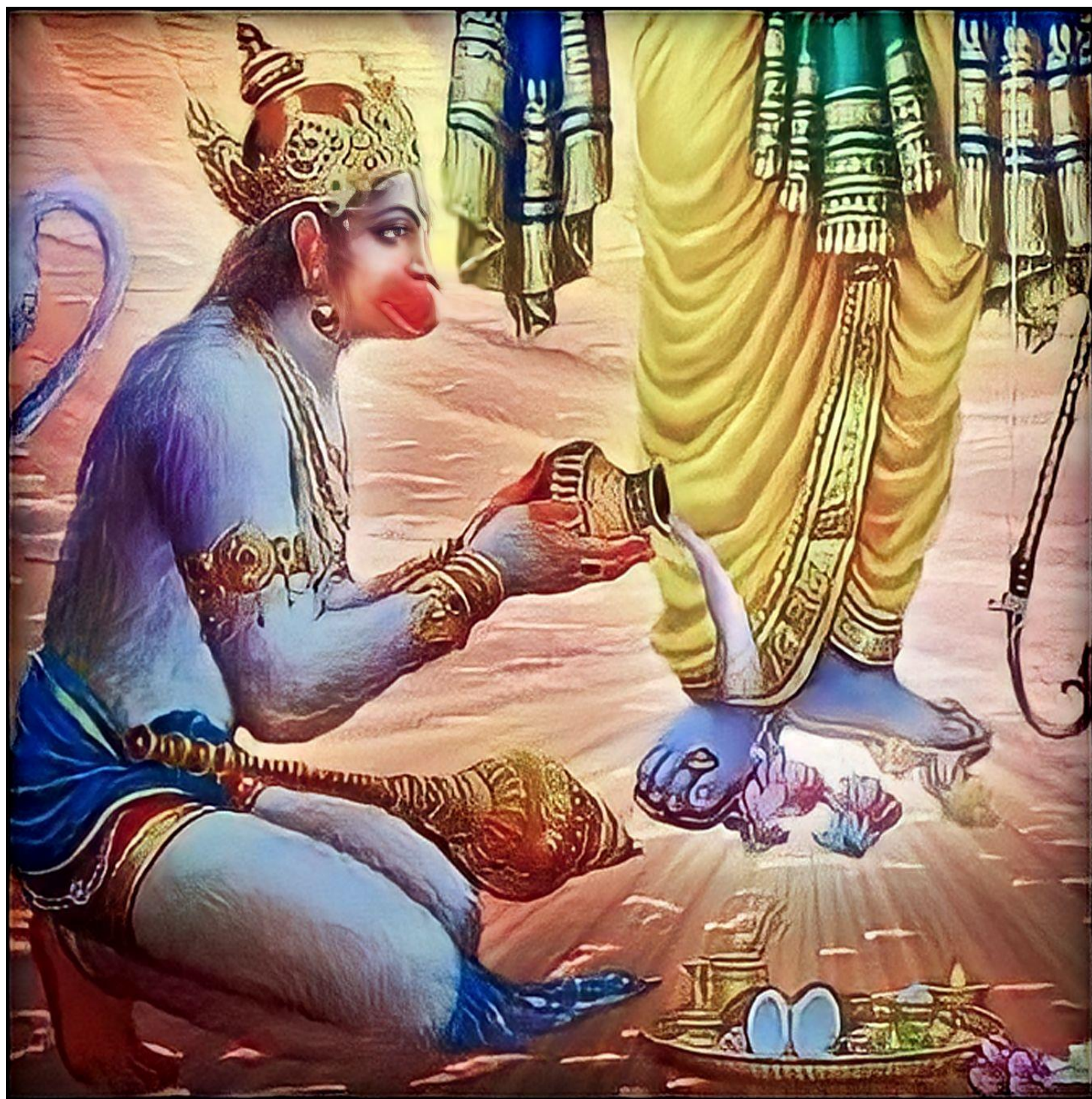
गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीरामसर्वस्वस्तोत्रम् ॥

रामो माता मत्पितारामचन्द्रो भ्रातारामो मत्सखा रामचन्द्रः ।

रामः स्वामी राम एवार्थदाता रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ १॥

Rāma is my mother, Rāma is my father, Rāma is my brother, and Rāma is my friend.. Rama is the master Rama is the giver of wealth I know no one but Rama I know no one 1॥

रामः सेव्यो वन्दनीयोऽपि रामो रामोनित्यं मादृशैश्चितनीयः ।

रामो ज्ञानं ध्यानगम्योऽपि रामो रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ २॥

Rama is to be served and worshiped and Rama is always to be thought of by people like me. Rama is the source of knowledge and meditation I know no one but Rama I do not know anyone else 2॥

रामो भुक्तिर्मुक्तिदाता च रामो रामोऽस्माकं राजते राजराजः ।

लोकेऽस्माभिर्लोक्यते रामचन्द्रो रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ ३

Rāma is the giver of enjoyment and liberation. Rāma is our King of kings.We see Ramachandra in this world I know no one but Rama I do not know anyone else 3. 3

रामोधर्मः कर्मरामो मदीयं रामोमह्यं कर्मसिद्धिप्रदाता ।

रामोऽजस्रः कर्मसिद्धिस्वरूपी रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ ४॥

Rama is the Dharma, Rama is the action, and Rama is mine, and Ram is the bestower of the perfection of action. Rama is the inexhaustible embodiment of the perfection of action I know no one but Rama 4॥

रामोऽस्माभिः पूजनीयोनितान्तं रामोऽस्माभिः प्रत्यहं कीर्तनीयः ।

रामोऽस्माभिर्गोपनीयो गुहान्ते रामदन्यं नैव जाने न जाने ॥ ५॥

Rama is the one we should worship and Rama is the one we should chant every day. Rama is to be kept secret by us at the end of the heart, I do not know anyone other than Rama 5॥

रामोऽस्माकं दुःखहर्ता त्रिलोक्यां रामोऽस्माकं कर्मकर्ता सदैव ।

रामोऽस्माकं कर्मभूतो विभाति रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ ६॥

Rāma is the reliever of our sufferings in the three worlds, Rāma is always the performer of our actions. Rama appears to be our work I know no one but Rama I do not know anyone else 6॥

रामोज्ञातिः ख्यातिरप्येव रामो रामः कीर्तिः पूर्तिरप्येव रामः ।

सर्वस्वं मे रामचन्द्रोऽवनीन्द्रो रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ ७॥

Rama is the relative, Rama is the fame, Rama is the fulfillment. Rāmacandra is my entire possessions and I know no one but Rāma. 7॥

ग्रामेरण्ये जागरे स्वप्नकाले मार्गे दुर्गे गच्छतोऽगच्छतो मे ।

शश्वल्लोके रक्षकस्त्वेव रामो रामादन्यं नैव जाने न जाने ॥ ८॥

In the village, in the forest, awake, in my dreams, on the road, in the fortress, I was walking and coming back. Rama is the eternal protector in this world I know no one but Rama 8॥

ये वै त्रिसन्ध्यं प्रपठन्ति नित्यं श्रीरामसर्वस्वमनन्य भक्त्या ।

श्रीरामरामेण कृतं कृतार्थास्तेऽप्यच्युतं रामपदं प्रयान्ति ॥ ९॥

Those who daily recite this mantra for morning, noon and evening with unwavering devotion to Lord Rāma, the Supreme Personality of Godhead. Those who have achieved the goals of Lord Rāma and Lord Rāma attain the abode of the infallible Lord Rāmacandra. 9. 9॥

इति श्रीरामसर्वस्वस्तोत्रम् सम्पूर्णम्श्रीरामसर्वस्वस्तोत्रम् सम्पूर्णम्

॥सम्पूर्णम्
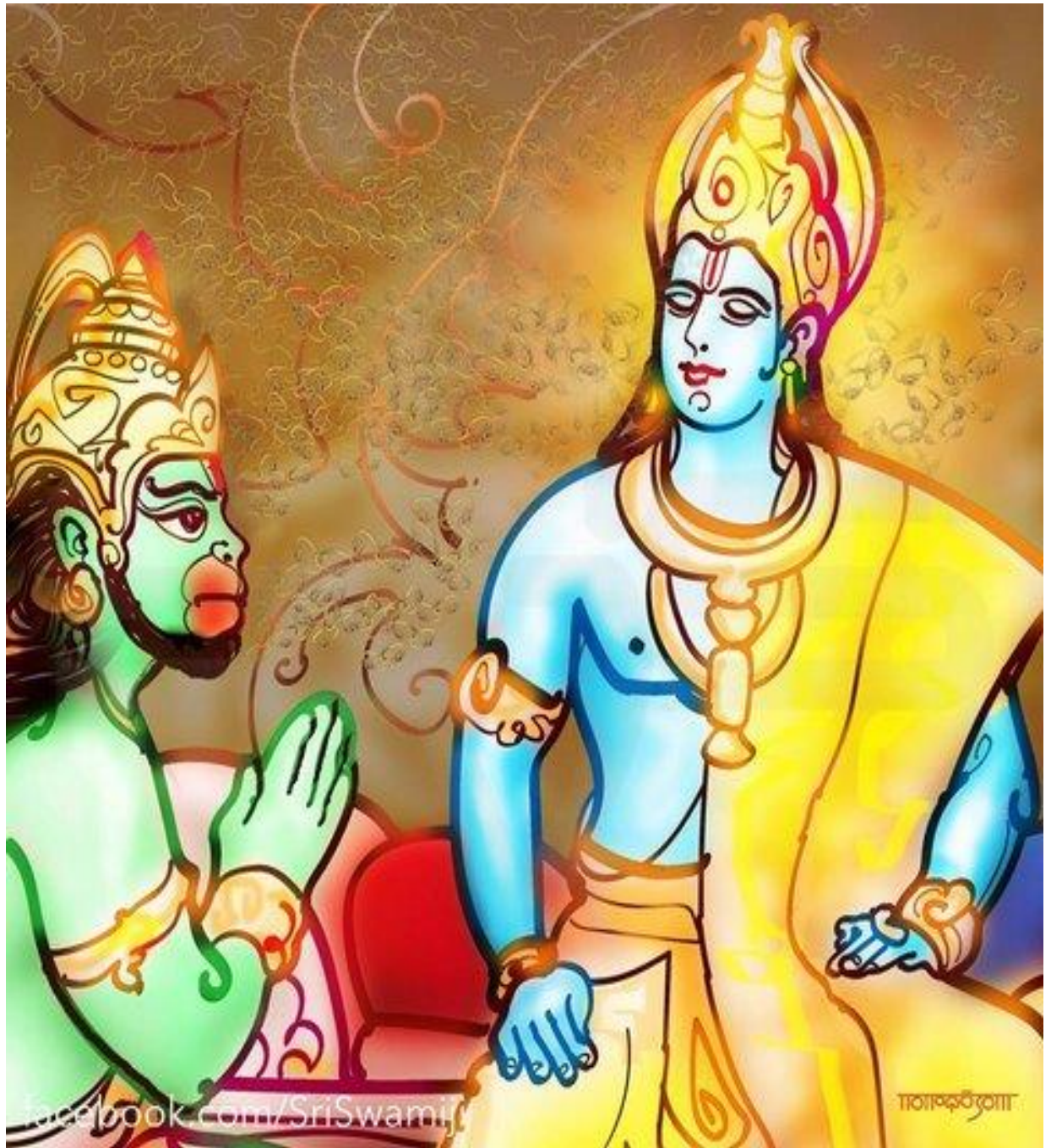
श्रीहनुमत्प्रोक्त मन्त्रराजात्मक रामस्तव

तिरश्चामपि चारातिसमवायं समेयुषाम् ।

यतः सुग्रीवमुख्यानां यस्तमुग्रं नमाम्यहम् ॥ १ ॥

अपने मुख्य शत्रु रावण के विनाश के लिए जिन्होंने किराए सुग्रीव आदि तिर्यंग योनि में उत्पन्न वानर तथा भालुओं की सेना संगठित की, उन अति उग्र भगवान श्रीराम को मैं नमस्कार करता हूं।

सकुदेव प्रपन्नाय विशिष्टामैरयच्छ्रियम् ।

बिभीषणायाब्धितटे यस्तं वीरं नमाम्यहम् ॥ २ ॥

समुद्र तट पर आए विभीषण को केवल एक बार "मैं आपकी शरण में हूं " ऐसा कहने पर जिन्होंने लंका का राज्य सहित अपार वैभव प्रदान कर लिया, उन महा वीर श्रीराम को मैं प्रणाम करता हूं।

यो महान् पूजितो व्यापी महान् वै करुणामृतम् ।

श्रुतं येन जटायोश्च महाविष्णुं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥

जो सर्वव्यापक हैं, सबसे महान, और देवता, ऋषि मुनियों से भी पुजित महान कृपा सुधा के मुर्तियां स्वरुप है, और उस कृपा सुधा से जटायु तक जिन्होंने सस्कति कर मुक्त कर दिया, उन महाविष्णु स्वरुप भगवन श्रीराम को मैं प्रणाम करता हूं।

तेजसाप्यायिता यस्य ज्वलन्ति ज्वलनादयः ।

प्रकाशयते स्वतन्त्रो यस्तं ज्वलन्तं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

अग्नि, सुर्य और चन्द्र आदि तेजस्वी ज्योतिपुंज जिनके तेज से प्रकाशित एवं प्रज्वलित होते हैं, जो स्वयं अपने तेज से प्रकाशित होते हैं, उन प्रज्वलित तेजोमय भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

सर्वतोमुखता येन लीलया दर्शिता रणे ।

रक्षसां खरमुख्यानां तं वन्दे सर्वतोमुखम् ॥ ५ ॥

रणस्थल में खर, दुषण, त्रिशिरा आदि राक्षसों से युद्ध करते समय जिन्होंने अपनी लीला मात्र से अपना मुखमंडल सभी ओर दिखलाया और सबका नाश कर दिया, उन सर्वतोमुख भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

नृभावं यः प्रपन्नानां हिनस्ति च तथा नृषु ।

सिंहः सत्त्वेष्विवोत्कृष्टस्तं नृसिंहं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥

शरण में आते ही जो मनुष्य के सामान्य मोहमय मनुष्य भाव को नष्ट कर उन्हें लोकोत्तर ज्ञान और विशिष्ट दिव्य शक्तियों से संपन्न कर देते हैं और जो समस्त जगत में सिहं के समान बलशाली है, उन नरसिंह भगवान श्रीराम को मैं प्रणाम करता हूं।

यस्माद्विभ्यति वातर्कज्वलनेन्द्राः समृत्यवः ।

भियं तनोति पापानां भीषणं तं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥

जिन से अग्नि, वायु, सुर्य, इन्द्र, यम आदि सभी भयभीत रहते हैं, और पाप तो उनके भय से दुर रहता है, उन भीषण भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

परस्य योग्यतापेक्षारहितो नित्यमङ्गलम् ।

ददात्येव निजौदार्याद्यस्तं भद्रं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

जो अपने भक्तों के किसी भी योग्यता आदि की उपेक्षा किए बिना ही अपने उदार स्वभाव के कारण सदा सब कुछ देते ही रहते हैं और जो नित्य मंगलस्वरुप है उन परम भद्र स्वरुप सौजन्यमुर्ति भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

यो मृत्युं निजदासानां नाशयत्यखिलेष्टदः ।

तत्रोदाहृतये व्याधो मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

जो अपने भक्तों के मृत्यु का समुलच्छेदन कर समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण कर देते हैं, इस संबंध में महर्षि वाल्मीकि जो पहले कभी व्याध का काम करते थे परम प्रमाण है ऐसे मृत्यु के भी मृत्यु भक्तवत्सल भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

यत्पादपद्मप्रणतो भवत्युत्तमपुरुषः ।

तमजं सर्वदेवानां नमनीयं नमाम्यहम् ॥ १० ॥

जिनके चरणकमलों को प्रणाम करते ही अधमपुरुष भी अति उत्तम पुरुष बन जाता है, उन जन्म आदि जड़ अविकारों से मुक्त सभी देवताओं से पुजित भगवान श्री राम को मैं प्रणाम करता हूं।

अहंभावं समुत्सृज्य दास्येनैव रघुत्तमम् ।

भजेऽहं प्रत्यहं रामं ससीतं सहलक्ष्मणम् ॥ ११ ॥

मैं (हनुमान) ब्रह्मैक आत्मा भाव को परित्याग कर दास्य भाव अर्थात सेवक- सेव्य भाव से लक्ष्मण सहित श्रीसीताराम का भजन करता हूं।

नित्यं श्रीरामभक्तस्य किंकरा यमकिंकराः ।

शिवमय्यो दिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिकाः ॥ १२ ॥

भगवान श्री राम के लिए यमदुत भी सदा के लिए क़िंकर (सेवक- दास) बन जाते हैं उसके लिए दशों दिशाओं मंगलमयी हो जाती है।और सभी सिद्धियां उसके चरणों में लौटती है।

इमं हनुमता प्रोक्तं मन्त्रराजात्मकं स्तवम् ।

पठत्यनुदिनं यस्तु स रामे भक्तिमान् भवेत् ॥ १३ ॥

हनुमान द्वारा मंपत्रराजात्मक रामस्तव का जो पाठ करता है वह भगवान श्री राम का भक्त हो जाता है।

इति हनुमते प्रोक्ता मंपत्रराजात्मक रामस्तव संपुर्णम्।

हनुमान कृत श्रीराम स्तुति (स्कन्द महापुराण अन्तर्गत)

नमो रामाय हरये विष्णवे प्रभविष्णवे।

आदिदेवाय देवाय पुराणाय गदाभृते।।

Obeisance to Rama, Hari(क्लेश हरिष्यन्ति इति हरि), Visnu(सर्वव्यापक), the all-powerful Visnu.O original god, god of the ancients, bearer of the club.

विष्टरे पुष्पके नित्यं निविष्टाय महात्मने।

प्रहष्ट वानरानीकजुष्टपादाम्बुजाय ते ॥१॥

To the great soul who is always seated on a flowery mattress. The queen laughed and smiled at your lotus feet.

निष्पिष्ट राक्षसेन्द्राय जगदिष्टविधायिने,

नमः सहस्त्रशिरसे सहस्त्रचरणाय च।।

To the one who crushes lord of demons, who fulfills the desires of the world. O thousand-headed and thousand-footed one, I offer my obeisances to you**.**

सहस्त्राक्षाय शुद्‌धाय राघवाय च विष्णवे।।

भक्तार्तिहारिणे तुभ्यं सीतायाः पतये नमः ॥२॥

O thousandeyed pure omnipresent Rama. O lord of Sita, reliever of the sufferings of devotees I offer my obeisances unto Thee.

हरये नारसिंहाय दैत्यराजविदारिणे।

नमस्तुभ्यं वराहाय दन्ष्ट्रोद्‌धृतवसुन्धर।।

O deer Narasimha king of the demons who tears apart. O boar you have lifted the earth with your fangs I offer my obeisances to you

त्रिविक्रमयाय भवते बलियज्ञविभेदिने।

नमो वामन रूपाय नमो मन्दरधारिणे ॥३॥

O Trivikramaya, you are the distinguisher of the sacrifice of Bali. Obeisance to you in the form of Vamana Obeisance to you who hold mandar mountain.

नमस्ते मत्स्यरूपाय त्रयीपालनकारिणे।

नमः परशुरामाय क्षत्रियान्तकराय ते।।

Obeisance to you in the form of a fish who protect the three worlds. Obeisance to you, Parasurama, the destroyer of the Kshatriyas.

नमस्ते राक्षसघ्नाय नमो राघवरूपिणे।

महादेवमहाभीममहाकोदण्डभेदिने ॥४॥

“Obeisances to you who kill the demons and who are in the form of Rama. O great god, great fearful, who weilds great kodanda bow

क्षत्रियान्तकरक्रूरभार्गवत्रासकारिणे।

नमोस्त्वहल्यासंतापहारिणे चापधारिणे।।

O destroyer of Kshatriyas, cruel, terrifying Bhargava. Obeisance to you who remove the sorrows of Ahalya and who hold the bow.

नागायुतबलोपेतताटकादेहहारिणे।

शिलाकठिनविस्तारवालिवक्षोविभेदिने ॥५॥

Obessiance unto you who killed demoness tarka. Obessiance unto you who pierced rock hard chest of Vali.

नमो मायामृगोन्माथकारिणेऽज्ञानहारिणे।

दशस्यन्दनदु:खाब्धिशोषणागत्स्यरूपिणे।।

Obeisance to the destroyer of illusory deer headed I'll knowlege . O ten-chariotted one in the form of Agastya who dries up the ocean of sorrow

अनेकोर्मिसमाधूतसमुद्रमदहारिणे।

मैथिलीमानसाम्भोजभानवे लोकसाक्षिणे ॥६॥

O destroyer of the sea’s intoxication(pride), stirred by many waves. O light of the lotus of the mind of Maithili you are the witness of the worlds

राजेन्द्राय नमस्तुभ्यं जानकीपतये हरे।

तारकब्रह्मणे तुभ्यं नमो राजीवलोचन।।

“O Hari lord of Janaki I offer my obeisances to you king of kings. O lotus-eyed Taraka Brahma I offer my obeisances to you.

रामाय रामचन्द्राय वरेण्याय सुखात्मने।

विश्वामित्रप्रियायेदं नमः खरविदारिणे ॥ ७॥

O Rama Rama the moon the best of the happy souls

I offer my respectful obeisances unto you who are dear to Viswamitra and who killed demon khar and dushan 7॥

प्रसीद देवदेवेश भक्तानामभयप्रद।

रक्ष मां करुणासिन्धो रामचन्द्र नमोऽस्तु ते।।

Have mercy, O Lord of the gods and goddesses, bestower of fearlessness on your devotees. Protect me, O sea of mercy, O Ramachandra, I offer my obeisances unto Thee.

रक्ष मां वेदवचसामप्यगोचर राघव।

पाहि मां कृपया राम शरणं त्वामुपैम्यहम्॥८॥

Protect me, O Rama, you are even in the words of the Vedas. Protect me by your mercy O Rama I take refuge in Thee.

रघुवीर महामोहमपाकुरु ममाधुना,

स्नाने चाचमने भुक्तौ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु।।

In bathing, in washing, in eating, in waking, in dreaming, in sleeping.

सर्वावस्थासु सर्वत्र पाहि मां रघुनन्दन ॥९॥

O descendant of the Raghus protect me in all circumstances and everywhere.

महिमानं तव स्तोतुं कः समर्थो जगत्त्रये ।

त्वमेव त्वन्महत्वं वै जानासि रघुनन्दन ॥१०॥

Who in the three worlds is able to praise Your glory? You alone, O descendant of the Raghus, know your greatness.

इति स्कन्द महापुराण अन्तर्गत श्रीराम स्तोत्रम् संपुर्णम्

श्रीमद्भागवत महापुराण अन्तर्गत हनुमान कृत श्रीराम स्तोत्र

श्रीशुक उवाच

किम्पुरुषे वर्षे भगवन्तमादिपुरुषं लक्ष्मणाग्रजं सीताभिरामं रामं तच्चरणसन्निकर्षाभिरत: परमभागवतो हनुमान् सह किम्पुरुषैरविरतभक्तिरुपास्ते ॥ १ ॥

Śrīla Śukadeva Gosvāmī said: My dear King, in Kimpuruṣa-varṣa the param bhagwat Hanumān is always engaged with the inhabitants of that land in devotional service to adipurusha Lord Rāmacandra, the elder brother of Lakṣmaṇa and dear husband of Sītādevī.

आर्ष्टिषेणेन सह गन्धर्वैरनुगीयमानां परमकल्याणीं भर्तृभगवत्कथां समुपशृणोति स्वयं चेदं गायति ॥ २ ॥

A host of Gandharvas is always engaged in chanting the glories of Lord Rāmacandra. That chanting is always extremely auspicious. Hanumānjī and Arṣṭiṣeṇa, the chief person in Kimpuruṣa-varṣa, constantly hear

those glories with complete attention. Hanumān chants the following mantras.

ॐ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नम आर्यलक्षणशीलव्रताय नम उपशिक्षितात्मन उपासितलोकाय नम: साधुवादनिकषणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाराजाय नम इति ॥ ३ ॥

Let me please Your Lordship by chanting the bīja-mantra oṁkāra. I wish to offer my respectful obeisances unto the Personality of Godhead, who is the best among the most highly elevated personalities. Your Lordship is the reservoir of all the good qualities of Āryans, people who are advanced. Your character and behavior are always consistent, and You always control Your senses and mind. Acting just like an ordinary human being, You exhibit exemplary character to teach others how to behave. There is a touchstone that can be used to examine the quality of gold, but You are like a touchstone that can verify all good qualities. You are worshiped by brāhmaṇas who are the foremost of all devotees. You, the Supreme Person, are the King of kings, and therefore I offer my respectful obeisances unto You.

यत्तद्विशुद्धानुभवमात्रमेकं स्वतेजसा ध्वस्तगुणव्यवस्थम् ।

प्रत्यक्प्रशान्तं सुधियोपलम्भनं ह्यनामरूपं निरहं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

The Lord, whose pure form [sac-cid-ānanda-vigraha] is uncontaminated by the modes of material nature, can be perceived by pure consciousness. In the Vedānta He is described as being one without a

second. Because of His spiritual potency, He is untouched by the contamination of material nature, and because He is not subjected to material vision, He is known as transcendental. He has no material activities, nor has He a material form or name. Only in pure consciousness, Kṛṣṇa consciousness, can one perceive the transcendental form of the Lord. Let us be firmly fixed at the lotus feet of Lord Rāmacandra, and let us offer our respectful obeisances unto those transcendental lotus feet.

मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षोवधायैव न केवलं विभो: ।

कुतोऽन्यथा स्याद्रमत: स्व आत्मन: सीताकृतानि व्यसनानीश्वरस्य ॥ ५ ॥

It was ordained that Rāvaṇa, chief of the Rākṣasas, could not be killed by anyone but a man, and for this reason Lord Rāmacandra, the Supreme Personality of Godhead, appeared in the form of a human being. Lord Rāmacandra’s mission, however, was not only to kill Rāvaṇa but also to teach mortal beings that material happiness centered around sex life or centered around one’s wife is the cause of many miseries. He is the self-sufficient Supreme Personality of Godhead, and nothing is lamentable for Him. Therefore why else could He be subjected to tribulations by the kidnapping of mother Sītā?

न वै स आत्मात्मवतां सुहृत्तम: सक्तस्त्रिलोक्यां भगवान् वासुदेव: ।

न स्त्रीकृतं कश्मलमश्नुवीत न लक्ष्मणं चापि विहातुमर्हति ॥ ६ ॥

Since Lord Śrī Rāmacandra is the Supreme Personality of Godhead, Vāsudeva, He is not attached to anything in this material world. He is the most beloved Supersoul of all self-realized souls, and He is their very intimate friend. He is full of all opulences. Therefore He could not possibly have suffered because of separation from His wife, nor could He have given up His wife and Lakṣmaṇa, His younger brother. To give up either would have been absolutely impossible.

न जन्म नूनं महतो न सौभगं न वाङ्न बुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतु: ।

तैर्यद्विसृष्टानपि नो वनौकस-श्चकार सख्ये बत लक्ष्मणाग्रज: ॥ ७ ॥

One cannot establish a friendship with the Supreme Lord Rāmacandra on the basis of material qualities such as one’s birth in an aristocratic family, one’s personal beauty, one’s eloquence, one’s sharp intelligence or one’s superior race or nation. None of these qualifications is actually a prerequisite for friendship with Lord Śrī Rāmacandra. Otherwise how is it possible that although we uncivilized inhabitants of the forest have not taken noble births, although we have no physical beauty and although we cannot speak like gentlemen, Lord Rāmacandra has nevertheless accepted us as friends?

सुरोऽसुरो वाप्यथ वानरो नर: सर्वात्मना य: सुकृतज्ञमुत्तमम् ।

भजेत रामं मनुजाकृतिं हरिं य उत्तराननयत्कोसलान्दिवमिति ॥ ८ ॥

Therefore, whether one is a demigod or a demon, a man or a creature other than man, such as a beast or bird, everyone should worship Lord Rāmacandra, the Supreme Personality of Godhead, who appears on this earth just like a human being. There is no need of great austerities or penances to worship the Lord, for He accepts even a small service offered by His devotee. Thus He is satisfied, and as soon as He is satisfied, the devotee is successful. Indeed, Lord Śrī Rāmacandra brought all the devotees of Ayodhyā back home, back to Godhead [Vaikuṇṭha].

इति श्रीमद्भागवत महापुराण अन्तर्गत हनुमान कृत श्री राम स्तोत्रम् संपुर्णम्